स्वतंत्र भारत में केवल भ्रष्टाचार ही पनप रहा है। वह इतना प्रबल हो गया है कि उसने केन्द्रीय मंत्रिमंडल पर भी अपना प्रभाव जमा लिया है। आए दिन ऊंचे से ऊंचे प्रशासकों के यहां से करोड़ों की संपत्ति पकड़ी जा रही है। स्टैम्प पेपर घोटाले ने तो देशभर को अपने जाल में फंसा लिया। किन्तु शासन को उसकी भनक तक नहीं लगी। ऐसी है हमारी शासन-व्यवस्था। हमारी न्याय-व्यवस्था भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों को सजा देने में इतना विलंब करती है कि किसी भ्रष्टाचारी को सजा मिलने की संभावना ही नजर नहीं आती। बिना घूस के नागरिकों को सरकारी दफ्तरों से अपने छोटे से छोटे काम करवाना भी संभव नहीं रहा। अर्धशताब्दी की राजनीति ने हमें इस अवस्था में ला पटका है। भ्रष्टाचार की इस देशव्यापी महामारी से मुक्ति दिलाने वाला कोई नेता, दल या संगठन दिखाई नहीं देता। नई पीढ़ी के अलावा यह आवश्यक काम कौन करेगा?

पिछले कुछ समय के घटनाक्रम से मेरा यह विश्वास दृढ़ हो चला है कि राजनीति के भरोसे देश का विशेषकर गांवों का विकास नहीं हो सकता। इसके लिए समाज को ही आगे आना होगा और समाज को ऊर्जा देने क काम सिर्फ युवा-वर्ग ही कर सकता है। मैं देश की तरूणाई का पुनः आह्वान करता हूँ कि वह अपना उत्तरदायित्व समझे और गांडीव उठाए।

शुभाकांक्षी -

नाना देशमुख

(नाना देशमुख)

प्रिय युवा बंधुओं और बहनों,

विदेशी शासकों के प्रति आक्रोश और संघर्ष अधिकाधिक उग्र बनाने के लिए व्यापक जन-आंदोलन करना आवश्यक था। शौर्यपूर्ण गीतों की रचना करना और प्रभावी ढंग से गाना तथा जोशीले भाषणों से नौजवानों में उत्साह, त्याग और बलिदान की भावनाएं जगाना जरूरी था। विदेशी शासकों के दमनकारी कदमों में अवरोध निर्माण करने के लिए संचार माध्यमों में खराबी उत्पन्न करना भी युक्तिसंगत था। ये सब कार्य स्वराज्य प्राप्ति तक ही सीमित होने चाहिए थे।

स्वराज्य प्राप्ति के बाद ''निर्माण युग'' प्रारंभ होना चाहिए था। राष्ट्र नवरचना में हर नागरिक को सहयोगी बनाना आवश्यक था। देश सदियों तक गुलामी में जकड़ा हुआ था। स्वतंत्र देश के नागरिकों के कर्तव्य की जानकारी उपलब्ध कराना नेतृत्व का दायित्व था। स्वावलंबन का स्वभाव विस्मृत हुआ था। सहअस्तित्व एवं सामाजिक दायित्व की भावना लुप्त हुई थी। आबादियों में परस्पर सहयोग की आदत शेष नहीं थी। पारतंत्र्य के कारण नागरिक सत्ताभिमुखी बने थे।

स्वराज्य पाते ही देश के नागरिकों में गुलामी के कारण आयी इन खराबियों को दूरकर सहअस्तित्व, परस्पर पूरकता एवं स्वावलंबन का स्वभाव विकसित करने के कार्य को प्राथमिकता दी जानी चाहिए थी। दुर्भाग्य से आजादी के गत उनसठ सालों में इस अनिवार्य कार्य की घोर उपेक्षा की गई और अपनी ही सरकार को विदेशी सरकार जैसा मानकर स्वातंत्र्य संग्राम के काल के विध्वंसात्मक कार्यक्रमों को जारी रखा गया है। कारण, स्वतंत्र भारत के राजनेताओं का लक्ष्य राष्ट्रोन्नति न होकर सत्ता प्राप्ति मात्र बन गया है।

राजसत्ता के लोभ में हमने अपनी मातृभूमि का विभाजन तक स्वीकार किया। सत्य और अहिंसा के पुजारियों ने लाखों निरीह लोगों की हत्याएं होने दीं। असंख्य परिवारों को परंपरागत घरों से उजड़ते हुए शरणार्थी बनने के लिए विवश किया।

सत्ता पाने के लिए अपने ही समाज का विघटन करने में संकोच नहीं किया। इसका प्रतिफल सभी दलों को भुगतना पड़ रहा है। हर एक दल टूट-फूट का शिकार बना है। इन दलों के चोटी के नेता भी एक-दूसरे को अपराधी घोषित कर रहे हैं। यह बना है स्वतंत्र भारत की राजनीति का चरित्र।

अब चुनाव में लालू वाद, मुलायम वाद, नीतिश कुमार वाद, चौटाला वाद, मायावती वाद, क्षेत्रीयवाद आदि सत्ता प्राप्ति के प्रभावी साधन बने हैं। हिन्दुत्व का अभिमान रखने वालों के पास हिन्दुओं में बढ़ रहे इस बिखराव को रोकने का तथा उसमें एकात्मता निर्माण करने का कोई व्यावहारिक उपक्रम दिखाई नहीं देता। मुस्लिम-तुष्टिकरण के खिलाफ हिन्दू रथ-यात्राएं निकाली जा रही हैं। फलस्वरूप, परोक्ष रूप से मुस्लिम वोट-बैंक की ही कीमत और अधिक बढ़ाने का काम हो रहा है।

1947 के पूर्व नौजवानों में देश के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने की प्रबल आकांक्षाएं थी। किन्तु स्वतंत्र भारत के नेतृत्व के आचरण के कारण स्वार्थसिद्धि की वृत्ति सर्वव्यापी बन गई है।